BA Part II (Subsidiary)

Dr. Chiranjeev Kr. Thakur
Sociology

Lecture I

बेरोजगारी के प्रकार (Types of Unemployment)

कार्य या क्रियाशीलता की प्रकृति के आधार पर समस्त प्रकार की बेरोजगारी को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है -

1) मौसमी बेरोजगारी – इसका अर्थ है कि मौसम विशेष के कारण उत्पन्न होने वाली बेरोजगारी जैसे उद्योगों एवं कृषि-क्षेत्र, दोनों में देखा जा सकता है। कुछ उद्योगों की प्रकृति इस प्रकार की होती है कि उन्हें वर्ष के सभी माह में चालू नहीं रखा जा सकता। इसलिये कुछ माह के लिए ऐसे उद्योग बंद हो जाते हैं और इसमें कार्यरत कुछ विशेष श्रेणी (मुख्यतः श्रमिक वर्ग) के लोगों को बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। जैसे चीनी उद्योग, आइस उद्योग, [illegible] उद्योग और मौसमी होटल व्यवसाय इत्यादि।

भारत में कृषि क्षेत्र में मौसमी बेरोजगारी को स्पष्ट देखा जाता है। एक फसल को काटकर दूसरी फसल को बोने के मध्य का समय कृषकों के लिये बेरोजगारी

का होता है। एक भारतीय कृषक वर्ष में लगभग 4-5 माह बेरोजगार रहता है। यद्यपि कृषि एक व्यवसाय है और प्रत्येक व्यवसाय में बेरोजगारी के कुछ दिन होते ही हैं। जैसा कि सर्वेक्षा व्यवसाय में एक व्यवसायी विवाह के मौसम में अधिक व्यस्त रहता है तथा वर्ष के लगभग 6 माह उसकी आय शून्य बराबर होती है।

2) औद्योगिक बेरोजगारी - औद्योगिक बेरोजगारी औद्योगिक कुप्रबन्ध और सरकार की आर्थिक नीतियों की असफलता के कारण उत्पन्न होती है। औद्योगिक क्षेत्रों में आवश्यकता से अधिक बेरोजगार लोगों का जमावड़ा, बाजार में अत्यधिक मंहगाई या मंदी का दौर चलना, अनियोजित औद्योगीकरण या फिर केन्द्र सरकार का उद्योगों के प्रति उपेक्षा का भाव आदि उद्योगों को बंदी के कगार पर ले जाते हैं। जिससे उद्योगपतियों और इन उद्योगों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को सामने बेरोजगारी का संकट उत्पन्न हो जाता है। वैसे ऐसी परिस्थिति में न तो कोई उद्योग सदा के लिये बन्द होता है और न ही उसके कर्मचारियों को सदा के लिये नौकरी से हटाया जाता है, परन्तु कुछ समय या ऐसी समस्या का समाधान कर लिया जाता है।